http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 7, 45-50

Article ID: 663

प्राकृतिक खेती से जमीन की उर्वरता कैसे बढ़ाएँ

रूपेंद्र कुमार[1]
मम्ता कम्बोज [2]
नवीश कुमार कम्बोज[3]

[1]कृषि विज्ञान केन्द्र, रोहतक
[2]कपास अनुभाग
आनुवंशिकी और पादप प्रजनन
[3]सहायक वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान)
चौधरी चरण सिंह हरियाणा
कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

*अनुरूपी लेखक

रूपेंद्र कुमार*

परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारी कृषि की वास्तविक शक्ति हमारी मिट्टी में निहित है। किसान दिन-रात मेहनत करके धरती से अन्न, फल, सब्जियाँ और अन्य आवश्यक कृषि उत्पाद प्राप्त करता है। लेकिन अच्छी फसल के लिए केवल बीज, पानी और खाद पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए मिट्टी का स्वस्थ, उपजाऊ और जीवंत होना भी आवश्यक है।आज खेती के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। लगातार एक ही फसल उगाना, रासायनिक उर्वरकों का असंतुलित उपयोग, फसल अवशेषों को जलाना, मिट्टी में जैविक पदार्थों की कमी, भूजल का गिरता स्तर तथा मिट्टी का कटाव कृषि उत्पादन को प्रभावित कर रहे हैं। कई क्षेत्रों में मिट्टी की लवणता, क्षारीयता और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी भी किसानों के लिए चिंता का विषय है।ऐसी परिस्थितियों में प्राकृतिक खेती एक महत्वपूर्ण विकल्प के रूप में उभर रही है। इसका उद्देश्य मिट्टी को केवल फसल उगाने का माध्यम मानने के बजाय एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में समझना है। इसमें मिट्टी के सूक्ष्मजीवों, जैविक पदार्थों, जल संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग पर विशेष ध्यान दिया जाता है। जमीन की उर्वरता बढ़ाने का अर्थ केवल खाद डालना नहीं, बल्कि मिट्टी की संरचना सुधारना, पोषक तत्वों का संतुलन बनाए रखना, जैविक पदार्थ बढ़ाना और मिट्टी में लाभकारी जीवों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना है।यदि किसान अपने खेत की मिट्टी को समझकर उचित तकनीकों को अपनाएँ, तो खेती को अधिक टिकाऊ बनाने, लागत का बेहतर प्रबंधन करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भूमि की उत्पादकता सुरक्षित रखने में सहायता मिल सकती है।

1. जमीन की उर्वरता क्या है और यह क्यों जरूरी है

जमीन की उर्वरता वह क्षमता है, जिसके माध्यम से मिट्टी पौधों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराती है और उनकी वृद्धि के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती है। स्वस्थ मिट्टी में पर्याप्त पोषक तत्वों के साथ-साथ उचित संरचना, हवा, नमी और जैविक गतिविधियाँ भी होती हैं। मिट्टी में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर तथा जिंक, आयरन और बोरॉन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व पौधों की वृद्धि में अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। इनमें से किसी पोषक तत्व की कमी या अधिकता फसल के विकास को प्रभावित कर सकती है। उर्वरता और मिट्टी की समग्र सेहत में अंतर समझना भी आवश्यक है। कोई मिट्टी पोषक तत्वों से भरपूर हो सकती है, लेकिन यदि उसमें जल निकास खराब हो, जैविक पदार्थ कम हों या लवणता अधिक हो, तो फसल का विकास फिर भी प्रभावित हो सकता है।

इसलिए प्राकृतिक खेती में मिट्टी की सेहत को कई पहलुओं से देखा जाता है:

- मिट्टी में जैविक कार्बन और जैविक पदार्थों की मात्रा।
- आवश्यक पोषक तत्वों की उपलब्धता और संतुलन।
- मिट्टी की जल धारण क्षमता तथा जल निकास।
- केंचुओं और लाभकारी सूक्ष्मजीवों की गतिविधियाँ।
- मिट्टी की संरचना और कटाव के प्रति प्रतिरोध।
- मिट्टी की लवणता, क्षारीयता और पीएच मान।

2. मिट्टी की जाँच से करें सुधार की शुरुआत

प्राकृतिक खेती में जमीन की उर्वरता बढ़ाने का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम मिट्टी की जाँच है। बिना जाँच के खाद, उर्वरक या सुधार सामग्री का प्रयोग करने से खर्च बढ़ सकता है और अपेक्षित लाभ नहीं मिलता। मिट्टी की जाँच से उसके पीएच मान, जैविक कार्बन और उपलब्ध प्रमुख पोषक तत्वों की स्थिति का पता लगाया जा सकता है। आवश्यकता पड़ने पर लवणता, क्षारीयता और अन्य समस्याओं की जाँच भी कराई जा सकती है। हरियाणा जैसे कृषि प्रधान राज्यों में मिट्टी की जाँच विशेष रूप से उपयोगी है। गेहूँ और धान के लगातार फसल चक्र वाले क्षेत्रों में पोषक तत्वों का असंतुलन, कुछ स्थानों पर जिंक की कमी, जलभराव और लवणीय या क्षारीय मिट्टी जैसी समस्याएँ सामने आ सकती हैं।किसान को अपने खेत के अलग-अलग हिस्सों से उचित तरीके से मिट्टी के नमूने लेकर नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विभाग या मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला में जाँच करवानी चाहिए। यदि खेत के किसी हिस्से की मिट्टी दूसरे हिस्से से अलग है, तो वहाँ से अलग नमूना लेना उपयोगी हो सकता है। मिट्टी की रिपोर्ट मिलने के बाद विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार सुधार के उपाय अपनाएँ। इससे अनावश्यक खर्च से बचने और फसल को सही पोषण देने में सहायता मिलेगी।

3. जैविक पदार्थ बढ़ाएँ, मिट्टी को जीवंत बनाएँ

मिट्टी की उर्वरता सुधारने में जैविक पदार्थों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैविक पदार्थ मिट्टी की संरचना सुधारने, नमी बनाए रखने और लाभकारी सूक्ष्मजीवों को भोजन उपलब्ध कराने में मदद करते हैं। प्राकृतिक खेती में स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग करके मिट्टी में जैविक पदार्थों की मात्रा बढ़ाई जा सकती है।

गोबर की सड़ी खाद : गोबर की अच्छी तरह सड़ी खाद मिट्टी में जैविक पदार्थ और कुछ पोषक तत्व जोड़ने का उपयोगी माध्यम है। इसे पशुओं के गोबर और उपयुक्त जैविक अवशेषों से तैयार किया जा सकता है।खाद को उचित तरीके से सड़ाना और उसका सुरक्षित भंडारण करना जरूरी है। कच्चे गोबर को बिना उचित प्रबंधन के खेत में डालने से कुछ परिस्थितियों में पौधों की वृद्धि, खरपतवार या रोग प्रबंधन से जुड़ी समस्याएँ हो सकती हैं।

कम्पोस्ट खाद: सूखी पत्तियों, फसल अवशेषों और अन्य उपयुक्त जैविक पदार्थों को नियंत्रित तरीके से सड़ाकर कम्पोस्ट बनाई जा सकती है। इससे खेत के अपशिष्ट को उपयोगी संसाधन में बदला जा सकता है। कम्पोस्ट बनाने के लिए नमी, हवा और पर्याप्त समय का ध्यान रखना चाहिए। तैयार खाद का रंग, गंध और परिपक्वता उसकी गुणवत्ता के संकेत दे सकते हैं, लेकिन खाद की वास्तविक पोषक गुणवत्ता प्रयोगशाला जाँच से बेहतर समझी जा सकती है।

वर्मी कम्पोस्ट: केंचुओं की सहायता से तैयार वर्मी कम्पोस्ट जैविक पदार्थ और पोषक तत्वों का उपयोगी स्रोत है। इसका प्रयोग फसल, मिट्टी की स्थिति और उपलब्धता के अनुसार किया जा सकता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि केवल वर्मी कम्पोस्ट डालने से हर खेत की सभी पोषक जरूरतें पूरी नहीं होतीं। इसका उपयोग संतुलित मिट्टी प्रबंधन के एक हिस्से के रूप में करना चाहिए।

फसल अवशेषों का पुनः उपयोग : गेहूँ का भूसा, सूखी पत्तियाँ और अन्य स्वस्थ फसल अवशेष खेत में जैविक पदार्थ लौटाने में मदद कर सकते हैं। इन्हें जलाने के बजाय उपयुक्त मशीनों और तकनीकों से

प्रबंधित करना मिट्टी तथा वायु की गुणवत्ता के लिए बेहतर है। फसल अवशेषों के प्रबंधन में अगली फसल की बुवाई, कीटों और रोगों की संभावना तथा उपलब्ध उपकरणों का ध्यान रखना चाहिए।

4. हरी खाद अपनाकर बढ़ाएँ मिट्टी की ताकत

हरी खाद मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने की एक महत्वपूर्ण कृषि तकनीक है। इसमें ढैंचा, सनई जैसी उपयुक्त फसलें उगाकर उन्हें उचित अवस्था में मिट्टी में मिला दिया जाता है। इनके विघटन से मिट्टी में जैविक पदार्थ जुड़ता है और पोषक तत्वों के चक्र को सहारा मिलता है। दलहनी फसलों की जड़ों में उपयुक्त राइजोबियम जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर सकते हैं। इससे कृषि प्रणाली में नाइट्रोजन के प्राकृतिक चक्र को मजबूत करने में सहायता मिलती है।

हरी खाद अपनाने से पहले किसान को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- फसल उगाने के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध हो।
- पानी की उपलब्धता और मिट्टी की स्थिति अनुकूल हो।
- हरी खाद की फसल को सही समय पर मिट्टी में मिलाया जाए।
- अगली मुख्य फसल की बुवाई में अनावश्यक देरी न हो।
- बीज और बुवाई की विधि स्थानीय कृषि विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार चुनी जाए।

हरियाणा में किसान अपनी फसल योजना के अनुसार हरी खाद को शामिल करने पर विचार कर सकते हैं। जहाँ सिंचाई का पानी सीमित हो, वहाँ ऐसी फसल चुनना आवश्यक है जो उपलब्ध संसाधनों के अनुकूल हो।

5. दलहनी फसलों और फसल चक्र को दें बढ़ावा

लगातार एक ही फसल उगाने से मिट्टी के कुछ पोषक तत्वों पर अधिक दबाव पड़ सकता है। इससे विशेष कीटों, रोगों और खरपतवारों की समस्याएँ भी बढ़ सकती हैं।फसल चक्र अपनाने से इन चुनौतियों को कम करने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अनाज वाली फसलों के साथ मूँग, उड़द, चना या अन्य दलहनी फसलों को शामिल किया जा सकता है।

दलहनी फसलें उपयुक्त परिस्थितियों में नाइट्रोजन स्थिरीकरण में मदद करती हैं। उनकी जड़ें और फसल अवशेष मिट्टी में जैविक पदार्थों के चक्र में योगदान दे सकते हैं। हालांकि, इन फसलों से मिलने वाला लाभ मिट्टी, जलवायु, फसल प्रबंधन और अवशेषों के उपयोग पर निर्भर करता है।मिश्रित खेती भी उपयोगी हो सकती है। इसमें दो या अधिक उपयुक्त फसलों को एक साथ उगाया जाता है। सही फसल संयोजन से उपलब्ध भूमि, प्रकाश, पानी और पोषक तत्वों का बेहतर उपयोग किया जा सकता है।किसान को फसल चक्र बनाते समय मिट्टी की जाँच, सिंचाई की सुविधा, बाजार की माँग और परिवार की आय की जरूरतों को ध्यान में रखना चाहिए।

6. मल्चिंग से बचाएँ मिट्टी की नमी और संरचना

मल्चिंग यानी मिट्टी की सतह को उपयुक्त जैविक सामग्री से ढकना प्राकृतिक खेती की एक उपयोगी विधि है। इसमें सूखी पत्तियों, भूसे और स्वस्थ फसल अवशेषों का उपयोग किया जा सकता है।खाली मिट्टी पर सीधी धूप पड़ने से नमी तेजी से कम हो सकती है। मल्चिंग मिट्टी की सतह को ढककर वाष्पीकरण घटाने और नमी बनाए रखने में मदद कर सकती है। इसके अतिरिक्त मल्चिंग के कई लाभ हैं:

- मिट्टी के कटाव को कम करने में सहायता।
- खरपतवारों की वृद्धि पर नियंत्रण।
- मिट्टी के तापमान में अत्यधिक उतार-चढ़ाव को कम करना।
- जैविक सामग्री के विघटन से मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ जोड़ना।
- वर्षा की बूँदों के सीधे प्रहार से मिट्टी की सतह की रक्षा।

हालाँकि, मल्च की मात्रा और प्रकार फसल के अनुसार तय करना चाहिए। रोगग्रस्त अवशेषों का प्रयोग नहीं करना चाहिए और दीमक, कृंतक या अन्य कीटों की समस्या वाले खेतों में उचित निगरानी रखनी चाहिए। धान की पराली का प्रबंधन विशेष

रूप से महत्वपूर्ण है। इसे जलाने के बजाय उपयुक्त मशीनों, मल्चर, हैप्पी सीडर या अन्य स्थानीय रूप से उपलब्ध तकनीकों की सहायता से प्रबंधित किया जा सकता है।

7. मिट्टी के लाभकारी सूक्ष्मजीवों को बढ़ावा दें

मिट्टी में अनेक प्रकार के जीवाणु, कवक और अन्य सूक्ष्मजीव पाए जाते हैं। ये जैविक पदार्थों को विघटित करने, पोषक तत्वों के चक्र में योगदान देने और पौधों की जड़ों के आसपास उपयोगी गतिविधियाँ करने में मदद करते हैं।

मिट्टी में जैविक पदार्थों की उपलब्धता, उचित नमी और हवा का संतुलन इन जीवों की गतिविधियों को प्रभावित करता है।

लाभकारी सूक्ष्मजीवों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने हेतु किसान निम्नलिखित उपाय अपना सकते हैं:

1. मिट्टी में उपयुक्त जैविक पदार्थ मिलाएँ।
2. फसल अवशेषों का सुरक्षित और उचित प्रबंधन करें।
3. जरूरत से अधिक जुताई से बचें।
4. खेत में नमी और जल निकास का संतुलन बनाए रखें।
5. फसल चक्र और विविधता को प्रोत्साहित करें।
6. जैव उर्वरकों का प्रयोग फसल और मिट्टी की आवश्यकता के अनुसार करें।

बाजार में उपलब्ध जैव उर्वरकों को खरीदते समय उनकी गुणवत्ता, उपयोग की अंतिम तिथि और भंडारण संबंधी निर्देश देखें। इन्हें केवल लेबल और विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार प्रयोग करना चाहिए।गोबर, गोमूत्र या पौधों से तैयार पारंपरिक घोलों का उपयोग कुछ प्राकृतिक कृषि पद्धतियों में किया जाता है, लेकिन प्रत्येक घोल से सभी पोषक तत्वों की जरूरत पूरी हो जाएगी, ऐसा मानना सही नहीं है। मिट्टी की जाँच और संतुलित पोषण प्रबंधन जरूरी है।

8. पानी का उचित प्रबंधन करें

मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में जल प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। अत्यधिक सिंचाई से कुछ परिस्थितियों में पोषक तत्व नीचे जा सकते हैं, जबकि पानी की कमी से पौधों की वृद्धि और मिट्टी में जैविक गतिविधियाँ प्रभावित हो सकती हैं।किसान को फसल की आवश्यकता, मिट्टी के प्रकार और मौसम के अनुसार सिंचाई करनी चाहिए। खेत का समतलीकरण, उचित जल निकास, वर्षा जल संचयन और आवश्यकता के अनुसार ड्रिप या स्प्रिंकलर सिंचाई अपनाना उपयोगी हो सकता है।जहाँ जलभराव की समस्या है, वहाँ खेत में जल निकास की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। वहीं ढलानदार भूमि पर मेड़बंदी, घास की पट्टियाँ और अन्य मृदा संरक्षण उपाय अपनाए जा सकते हैं। हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में भूजल की गुणवत्ता और मिट्टी की लवणता भी कृषि उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। ऐसे खेतों में केवल जैविक खाद डालना पर्याप्त नहीं होता। मिट्टी और सिंचाई के पानी की जाँच के बाद ही सुधार के उपाय तय किए जाने चाहिए।

9. लवणीय और क्षारीय मिट्टी का सही उपचार

कुछ खेतों में मिट्टी की लवणता या क्षारीयता के कारण पौधों की जड़ों को पानी और पोषक तत्व प्राप्त करने में कठिनाई होती है। ऐसी स्थिति में फसल की वृद्धि कमजोर हो सकती है और पैदावार कम हो सकती है।लवणीय और क्षारीय मिट्टी की समस्याएँ एक जैसी नहीं होतीं, इसलिए उनका उपचार भी अलग हो सकता है। इनके लिए सबसे पहले मिट्टी की जाँच आवश्यक है।यदि मिट्टी सोडिक या क्षारीय प्रकृति की है, तो जिप्सम जैसे सुधारक की जरूरत कुछ परिस्थितियों में हो सकती है। लेकिन जिप्सम का प्रयोग बिना जाँच और उचित मात्रा की सलाह के नहीं करना चाहिए।लवणीय मिट्टी में पानी की गुणवत्ता, जल निकास और लवणों के प्रबंधन का महत्व अधिक होता है। सही परिस्थिति में उचित गुणवत्ता वाले पानी से लवणों को जड़ क्षेत्र से बाहर निकालने की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन यह

कार्य पर्याप्त जल निकास और विशेषज्ञ मार्गदर्शन के साथ ही करना चाहिए।ऐसे खेतों में कृषि विभाग, कृषि विश्वविद्यालय या कृषि विज्ञान केंद्र की सलाह लेना विशेष रूप से उपयोगी है।

10. संतुलित पोषण और सूक्ष्म पोषक तत्वों पर ध्यान दें

प्राकृतिक खेती का अर्थ पौधों को आवश्यक पोषक तत्वों से वंचित करना नहीं है। फसल की अच्छी वृद्धि के लिए नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश और अन्य आवश्यक पोषक तत्व सही मात्रा में उपलब्ध होने चाहिए।जिंक, आयरन, बोरॉन और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी भी कुछ क्षेत्रों में उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। लेकिन पत्तियों के पीले होने या पौधों की वृद्धि रुकने का कारण हमेशा पोषक तत्वों की कमी ही नहीं होता। पानी का तनाव, जड़ों की समस्या, रोग और मिट्टी की प्रतिकूल स्थिति भी ऐसे लक्षण पैदा कर सकती है।इसलिए लक्षण देखकर बिना पुष्टि के किसी उर्वरक या सूक्ष्म पोषक तत्व का प्रयोग करने के बजाय मिट्टी की जाँच और कृषि विशेषज्ञ की सलाह लें।प्राकृतिक संसाधनों से मिलने वाले पोषक तत्वों और जरूरत पड़ने पर वैज्ञानिक रूप से निर्धारित सुधार उपायों का संतुलित प्रबंधन करना ही बेहतर कृषि पद्धति का आधार है।

11. किसानों के लिए एक व्यावहारिक कार्ययोजना

जमीन की उर्वरता बढ़ाने के लिए किसान एक साथ सभी बदलाव करने के बजाय चरणबद्ध तरीके से काम कर सकते हैं।

पहला चरण: खेत को समझें

- मिट्टी की जाँच कराएँ।
- खेत के कमजोर हिस्सों की पहचान करें।
- पानी की उपलब्धता और जल निकास की स्थिति देखें।
- पिछले कुछ वर्षों की फसल और खाद संबंधी जानकारी लिखें।

दूसरा चरण: स्थानीय संसाधनों का उपयोग करें

- अच्छी तरह सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट का उचित प्रयोग करें।
- स्वस्थ फसल अवशेषों को खेत में वापस लाने की योजना बनाएँ।
- उपयुक्त समय पर हरी खाद उगाने पर विचार करें।
- मिट्टी की सतह को ढकने के लिए मल्चिंग अपनाएँ।

तीसरा चरण: फसल व्यवस्था में सुधार करें

- जहाँ संभव हो, दलहनी फसलें शामिल करें।
- फसल चक्र अपनाएँ।
- पानी की जरूरत के अनुसार फसल चुनें।
- कीट और रोगों की नियमित निगरानी करें।

चौथा चरण: परिणामों का मूल्यांकन करें

हर फसल के बाद उत्पादन, लागत, पानी की खपत और खाद के उपयोग का रिकॉर्ड रखें। समय-समय पर मिट्टी की जाँच दोहराएँ और देखें कि कौन-से उपाय आपके खेत में सबसे उपयोगी साबित हो रहे हैं।

12. प्राकृतिक खेती की सफलता में प्रशिक्षण और वैज्ञानिक मार्गदर्शन

प्राकृतिक खेती में जमीन की उर्वरता बढ़ाने के लिए किसान का अनुभव महत्वपूर्ण है, लेकिन वैज्ञानिक जानकारी भी उतनी ही जरूरी है। हर खेत की मिट्टी, जलवायु, फसल और पानी की स्थिति अलग होती है। इसलिए एक ही उपाय हर जगह समान परिणाम नहीं देता।कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विभाग और प्रशिक्षित कृषि विशेषज्ञ किसानों को मिट्टी की जाँच, खाद प्रबंधन, फसल चक्र, जैविक संसाधनों के उपयोग और जल संरक्षण के बारे में मार्गदर्शन दे सकते हैं। गाँवों में प्रदर्शन खेत विकसित किए जा सकते हैं, जहाँ किसान प्राकृतिक खेती की विभिन्न तकनीकों को अपनी परिस्थितियों में परख सकें। किसान समूह बनाकर खाद तैयार करने,

फसल अवशेष प्रबंधन और उपयुक्त कृषि उपकरणों के सामूहिक उपयोग की व्यवस्था भी कर सकते हैं।इसके साथ ही किसानों को अपनी खेती की लागत और उपज का हिसाब रखना चाहिए। प्राकृतिक खेती की किसी भी तकनीक को अपनाने से पहले उसके संभावित लाभ, श्रम की जरूरत, उपलब्ध संसाधन और बाजार की स्थिति पर विचार करना उपयोगी होगा।

निष्कर्ष: मिट्टी बचेगी, तभी खेती बचेगी

प्राकृतिक खेती में जमीन की उर्वरता बढ़ाना एक दिन या एक मौसम का काम नहीं है। यह लगातार चलने वाली ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें मिट्टी के स्वास्थ्य, जैविक पदार्थों, पोषक तत्वों, पानी और लाभकारी जीवों के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। मिट्टी की जाँच, अच्छी तरह सड़ी खाद, कम्पोस्ट, हरी खाद, दलहनी फसलें, फसल चक्र, मल्चिंग, लाभकारी सूक्ष्मजीवों का संरक्षण और उचित जल प्रबंधन जैसे उपाय इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। किसानों को यह समझना होगा कि मिट्टी की उर्वरता केवल अधिक खाद डालने से नहीं बढ़ती। इसके लिए खेत की वास्तविक जरूरत को समझना, स्थानीय संसाधनों का सही उपयोग करना और वैज्ञानिक सलाह के अनुसार निर्णय लेना जरूरी है।यदि किसान अपनी मिट्टी को स्वस्थ रखने के लिए आज से प्रयास शुरू करते हैं, तो वे आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिक टिकाऊ कृषि व्यवस्था की नींव रख सकते हैं।धरती हमारी अमूल्य धरोहर है। इसे स्वस्थ रखना केवल किसान की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज का दायित्व है। सरकार, वैज्ञानिकों, किसानों और उपभोक्ताओं के सामूहिक प्रयास से ही ऐसी कृषि व्यवस्था विकसित की जा सकती है, जो प्रकृति का संरक्षण करे और किसानों की समृद्धि में योगदान दे।